

### कैसे सबाल्टर्न महिला लेखिकाओं ने रूढ़ियों को तोड़ा?

#### चर्चा में क्यों?

- ◆ तीन गैर-ब्राह्मणवादी महिलाओं के लेखन के माध्यम से, नारीत्व के एक सबाल्टर्न आख्यान पर चर्चा की गयी है जो महिलाओं को समाज के नैतिक स्वास्थ्य के प्रतीक या राष्ट्रवाद और संस्कृति के ध्वजवाहक के रूप में देखने की उपेक्षा करता है।
- ◆ महिलाएं, उस समय की उच्च-जाति की महिलाओं से भिन्न लेखन शैली के माध्यम से, एक ओर परंपरा, राष्ट्रीयता और संस्कृति की अवधारणाओं से अलग हो गईं, और दूसरी ओर उदारवाद और आधुनिकता को भी बल दिया।

#### नारीत्व के दो पाठ

- ◆ 19वीं शताब्दी में, भारतीय नारीत्व पर दो विपरीत दृष्टिकोण सामने आए। यूरोपीय दृष्टिकोण ने भारत में महिलाओं को ब्राह्मणवादी रूढ़िवादिता और हिंदू परंपराओं द्वारा सीमित माना, जिसमें सुधार की आवश्यकता थी।
- ◆ **सुधारवादी आख्यान का उद्देश्य** महिलाओं का आधुनिकीकरण करना था, उनका मानना था कि उन्हें शिक्षा और उदारवादी ज्ञान से परिचित कराना समाज को प्रगति की ओर ले जाएगा। महिलाएं समाज के नैतिक स्वास्थ्य का प्रतीक बन गईं।
- ◆ हालाँकि, राष्ट्रवादी इतिहास लेखन ने भारतीय नारीत्व की ऐसी समझ को खारिज कर दिया। इसने पारंपरिक मेमसाहिबों या निम्न-वर्ग / जाति की महिलाओं के आख्यान से अलग करते हुए औपनिवेशिक मुठभेड़ों से उभरने के रूप में नारीत्व की फिर से कल्पना की।
- ◆ नई भारतीय महिलायें भारतीय संस्कृति और राष्ट्रवाद की रक्षक बनीं। भारतीय नारीत्व राष्ट्रवाद के आंतरिक केंद्र के लिए प्लेसहोल्डर था जो कि आध्यात्मिक और सांस्कृतिक था, जो राष्ट्रवाद के बाहरी कोर से अलग था तथा राज्य और राजनीतिक अर्थव्यवस्था से संबंधित था।
- ◆ इतिहास लेखन में समानताएँ थीं - उन्होंने आधुनिकता की आवश्यकता को पहचाना और महिलाओं के अनुभवों की उपेक्षा की। यहाँ तक कि जब उनके अनुभवों पर विचार किया गया, तब भी लिंग और जाति के प्रतिच्छेदन की अनदेखी की गई, जो उच्च-जाति की महिलाओं के अनुभवों को आख्यान तक सीमित कर देता है।
- ◆ पार्थ चटर्जी ने सुझाव दिया कि निम्न जाति की महिलाएँ स्वतंत्रता के गुणों को समझ नहीं सकती थीं। जाति के मुद्दों के खिलाफ उनका प्रतिरोध उपनिवेशवाद विरोधी आख्यान के साथ विलय हो गया।

- ◆ जबकि महिला का सवाल निचली जाति की महिलाओं के अनुभवों की उपेक्षा नहीं कर सकता था, इसने नारीत्व पर बौद्धिक विमर्श को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका नहीं निभाई। इसलिए, नारीत्व के इर्द-गिर्द समग्र आख्यान में दलित अनुभव और उसके अंतर एवं प्रासंगिकता को बताने का दायित्व दलित नारीवादी विद्वानों पर स्थानांतरित हो गया।

### आख्यान बदलना

- ◆ महिलाओं ने आख्यान लिखे और साझा नहीं किए।
- ◆ लेकिन ब्राह्मण या उच्च-जाति की महिलाएं आमतौर पर एक निर्धारित पैटर्न का पालन करती हैं, आत्मकथाएँ लिखती हैं जो उनकी भूमिकाओं को कम करती हैं और घरेलुता पर जोर देती हैं।
- ◆ इसके विपरीत, सावित्रीबाई फुले, ताराबाई शिंदे और मुक्ता साल्वे जैसी गैर-ब्राह्मण नारीवादी लेखकों ने अपने लेखन रूपों में परंपराओं को तोड़ा तथा चर्चा के गैर-पारंपरिक और विस्फोटक विषयों को शामिल किया, पितृसत्ता के सामाजिक मानदंडों पर सवाल उठाया और जातिगत भेदभाव पर चर्चा की।
- ◆ सावित्रीबाई फुले ने कविता और छंदों को अपने लेखन के रूप में चुना। शिक्षा, महिलाओं की स्वतंत्रता और निचली जातियों का उत्पीड़न आवर्ती विषय थे। यहाँ तक कि जब वे साहित्यिक परिपाटियों का प्रयोग करती थीं, तब भी वे अपरंपरागत विषयों पर लिखती थीं। उन्होंने अंग्रेजी भाषा के बारे में लिखने के लिए पोवाड़ा (योद्धाओं/राजाओं की महिमा गाने के लिए एक काव्य मीटर) का इस्तेमाल किया और अछूत शूद्र जातियों के साथ हुए अन्याय के बारे में बोलने के लिए प्रार्थना रूपों को तोड़-मरोड़ कर पेश किया।
- ◆ मुक्ता साल्वे ने लिखा कि कैसे पेशवाओं ने महारों को प्रताड़ित किया और उनकी मुक्ति की आशा थी।
- ◆ ताराभाई शिंदे, हालांकि भाषा की सीमाओं से बंधी हुयी थीं, उन्होंने निडर होकर एक लेखक के रूप में अपने विचार व्यक्त किए, रूढ़िवादी पुरुष लेखकों की आलोचना की और पितृसत्ता को चुनौती दी तथा धर्म, जाति और सामाजिक मानदंडों के साथ इसके गहरे बँधे संबंध - देश के साहित्यिक परिदृश्य में एक अज्ञात क्षेत्र।
- ◆ ताराभाई शिंदे शिक्षा के विषय पर गहराई से ध्यान नहीं देते हैं, वे पुरुषों के दोहरे मानकों की ओर इशारा करते हैं जो महिलाओं की शिक्षा पर रोक लगाते हैं, क्योंकि वे आसानी से परंपरा में और बाहर कदम रख सकते हैं।
- ◆ इस संरचना को चुनौती देने के लिए गैर-ब्राह्मण महिलाओं के बीच ताराभाई शिंदे का लेखन सबसे मजबूत आवाजों में से एक है।
- ◆ शास्त्रों में सम्मानित महिलाओं का उदाहरण लेते हुए, वह बताती हैं कि कैसे महिलाओं को उन दोषों के लिए तिरस्कृत और अपमानित किया जाता है जिन्हें वे दूर नहीं कर सकती हैं। वह बताती हैं कि ब्राह्मणवादी व्यवस्था के भीतर इस तरह की बदनामी केवल एक महिला तक ही सीमित नहीं है, बल्कि पूरी जाति के रूप में है। ये लेखक समाज से यह समझने की अपील करते हैं कि यह कैसे महिलाओं को मानवता से वंचित करता है, उन्हें असमान मानता है और उन्हें हिंसा के अधीन करता है।
- ◆ वे पुरुषों की धर्म की रूढ़िवादिता को पार करने की क्षमता में पाखंड की ओर इशारा करते हैं, जबकि महिलाओं के लिए नियम सख्त हो जाते हैं। पुरुष अंग्रेजों के अधीन काम करके या समुद्र के पार यात्रा करके धर्म को भ्रष्ट कर सकते थे, जबकि महिलाओं से परंपराओं और संस्कृतियों को बनाए रखने और सामान्य रूप से किले को संभालने की

अपेक्षा की जाती थी। ये लेखक हिंदू धर्म में रूढ़िवादिता का विरोध करने में महिलाओं के लिए निरंतरता और समानता की मांग करते हैं।

### शिक्षा की भूमिका की पुनर्कल्पना

- ◆ उनके लेखन की सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक शिक्षा के अर्थ के प्रति उनका दृष्टिकोण था।
- ◆ शुरू में जातिगत शुद्धता को लेकर अपनी चिंता के कारण शिक्षा से सावधान, ब्राह्मणों ने अंततः सरकारी नौकरियों, समृद्धि और सामाजिक स्थिति के लिए इसके महत्व को पहचाना।
- ◆ इस संघर्ष को सुलझाने के लिए, ब्राह्मणों ने आसानी से आंतरिक और बाहरी क्षेत्रों को अलग कर दिया, अंग्रेजी भाषा और शिक्षा के साथ अपने जुड़ाव के लिए नए औचित्य खोजे।
- ◆ समानांतर में, जैसे-जैसे शिक्षा सामाजिक और आर्थिक सीढ़ी पर चढ़ने का साधन बन गई, वैसे-वैसे यह गैर-ब्राह्मण समुदायों के लिए भी आकर्षक बन गई थी।
- ◆ इसने शिक्षा के प्रति गैर-ब्राह्मण आकांक्षाओं को ब्राह्मणों की शिक्षा की उपयोगितावादी अवधारणा तक सीमित कर दिया।
- ◆ लेकिन जहां सावित्रीबाई फुले ने अंग्रेजी शिक्षा का समर्थन किया, वहीं यह सिर्फ रोजगार की संभावनाओं के विस्तार का साधन नहीं था। शिक्षा सक्षम थी, इसने उनके अतीत को गंभीर रूप से देखने में मदद की, गैर-ब्राह्मणों को इतिहास तक पहुंच प्रदान की, और उन्हें अन्य गैर-ब्राह्मणों के साथ संवाद करने में भी मदद की।
- ◆ अंग्रेजी शिक्षा ने समाज में गैर-ब्राह्मणों को दी गई स्थिति को चुनौती देने में मदद की क्योंकि मिथकीय इतिहास जो उनकी संभावनाओं और क्षमताओं को सीमित करता था अब तथ्यों के रूप में आँख बंद करके आत्मसात नहीं किया गया था।
- ◆ मुक्ता साल्वे ने शिक्षा को जातिगत उत्पीड़न से बचाव के एक तरीके के रूप में देखा, जिसे उनके समुदाय ने सहा था और आशा व्यक्त की कि यह ब्राह्मणों द्वारा बनाई गई नैतिकता से अलग एक नई नैतिकता का निर्माण करेगी।

### निष्कर्ष

- ◆ इस प्रकार, गैर-ब्राह्मण महिलाओं के लेखन में शिक्षा की प्रेरणा रूढ़िवादी ब्राह्मणों की शिक्षा से अलग थी। इसमें चंगा करने की शक्ति थी, और जातिगत पदानुक्रम की विशेषता वाले आंतरिक आध्यात्मिक दुनिया को बदलने और इतिहास की व्याख्या पर सवाल उठाने की क्षमता थी।
- ◆ इन महिलाओं के लेखों में इस बात पर चर्चा की गई है कि कैसे महिलाओं और गैर-ब्राह्मणवादी जातियों की दयनीय स्थिति को धार्मिक मान्यताओं और प्रथाओं में बुना गया है। जब महिलाओं की बात आती है तो रूढ़िवादी (सही कार्रवाई) और रूढ़िवादी एक दूसरे के पूरक होते हैं।
- ◆ 19वीं शताब्दी एक ऐसा दौर था जब पुरुषों को हर पहलू में गौरवशाली माना जाता था, जबकि महिलाओं को एक नकारात्मक प्रभाव, स्वामित्व वाली वस्तु और शारीरिक और मनोवैज्ञानिक हिंसा से वश में करने वाली शक्ति माना जाता था।

- ◆ यह महिलाओं को समाज के नैतिक स्वास्थ्य के प्रतीक या राष्ट्रवाद और संस्कृति के ध्वजवाहक के रूप में देखने की उपेक्षा करता है। ब्राह्मणवादी महिलाओं के विपरीत, गैर-ब्राह्मण महिलाओं ने हिंदू समाज की नैतिकता की पुनर्कल्पना करके और उदार कानून और शिक्षा के लिए महिलाओं की मात्र विषय होने की धारणा को चुनौती देकर इतिहास में नारीत्व के लिए एक स्थिति पर जोर दिया।

